Research Ambition ISSN: 2456-0146
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer - reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.researchambition.com Email: publish2017@gmail.com
Vol. 4, Issue-IV
Feb. 2020

1857 की जनक्रांति पर भारतीय इतिहास–लेखनः एक अध्ययन

डॉ० मनोज कुमार
नेट/जे.आर.एफ., सह पी.एच.डी., इतिहास विभाग पटना।
Email: 7272manojkumar@gmail.com
Orcid: https://orcid.org/0000-0001-9589-0656
DOI: https://doi.org/10.53724/ambition/v4n4.05

संक्षिप्त रूपः

साम्राज्यवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर घटने वाले घटनाओं में 1857–58 की जन क्रांति का प्रमुख स्थान है। यद्यपि इस विद्रोह पर किए गए शुरूआती इतिहास लेखन में अंग्रेज इतिहासकारों, बुद्धिजीवियों के साथ कार्ल मार्क्स का प्रमुख स्थान है लेकिन उनके दृष्टिकोण में भारी अंतर भी था। जहां मार्क्स ने इस विद्रोह को साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ मुक्ति के लिए लड़ा गया एक लोक युद्ध की संज्ञा दी वहीं साम्राज्यवादी लेखकों ने इसे व्यक्तिगत स्वार्थों और निजी कारणों से प्रेरित बतलाया। दूसरी और ब्रिटिश सरकार इस विद्रोह के लिए एक वर्ग विशेष को उत्तरदाई ठहरा रही थी जिसका जवाब दिया जाना भी आवश्यक था। सरकारी और गैर सरकारी अंग्रेजी प्रशासकों और विद्वानों तथा इतिहासकारों ने जिस ढंग से इस विद्रोह का चित्रण किया उससे पढ़े–लिखे भारतीयों में स्वाभाविक रूप से आक्रोश था और उनमें कुछ लोग इसके वास्तविक कारण और स्वरूप को उजागर करने के लिए अभिप्रेरित हुए।

शब्द कुंजी :– 1857 के विद्रोह पर प्रमुख भारतीय इतिहासकार एवं बुद्धिजीवी बी०डी० सावरकर, सैय्यद अहमद खां, आर०सी० मजुमदार, एस. एन. सेन, एस०वी० चौधरी, हरप्रसाद चट्‌टोपाध्याय तथा ताराचंद आदि द्वारा किये गये इतिहास लेखन के अध्ययन का महत्व।

1857–58 का विद्रोह 19वीं शताब्दी के भारतीय इतिहास की एक प्रमुख एवं युगान्तकारी घटना थी जिसकी सार्वजनिक चर्चाएँ इंगलैंड और भारत में समान रूप से हुई और बुद्धिजीवियों एवं इतिहासकारों के बीच प्रारंभ से चिन्तन और अध्ययन का विषय बना रहा। शुरूआती दौर में इस घटना के कारणों एवं स्वरूप पर प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करनेवालों में विभिन्न समुदायों के अंग्रेज लेखकगण शामिल थे जिन्होंने विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रेरित होकर तथा साम्राज्यवादी हित का ख्याल रखते हुए इस घटना का लेखा–जोखा प्रस्तुत किया था। लेकिन कुछ समयान्तराल के बाद अंग्रेजी बुद्धिजीवियों में डिजरैली जैसे लोगों ने इस घटना के महत्व एवं गंभीरता को समझते हुए इसके वस्तुनिष्ठ विश्लेषण की ओर इतिहासकारों का ध्यान आकृष्ट किया। सर जॉन विलियम के० तथा जी०वी० मैलिसन के द्वारा इस घटना का इतिहास लेखन यह प्रदर्शित करता है कि अंग्रेजी इतिहास लेखन के अन्तर्गत भी इस घटना को बहुआयामी स्वरूप के विश्लेषण और इसके लिए उत्तरदायी वास्तविक कारणों को इतिहास की रोशनी में देखने के प्रयास किये गये।

यद्यपि विगत वर्षों में 1857–58 पर लिखे गये अंग्रेजी इतिहास–लेखन के अध्ययन की दिशा में कुछ प्रयास किए गए हैं, किन्तु अबतक भारतीय इतिहासकारों द्वारा 1857–58 के विद्रोह पर लिखे गये ऐतिहासिक ग्रंथों का इस दृष्टिकोण से कोई उल्लेखनीय विश्लेषण या अध्ययन नहीं हो पाया है। यह सर्वविदित है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय इतिहासकारों के सामने एक बड़ी चुनौती यह थी कि वे साम्राज्यवादी भारतीय इतिहास–लेखन के दृष्टिकोण से हटकर सही ढंग से ऐतिहासिक अध्ययन को प्रस्तुत करें। परिणामस्वरूप भारतीय बुद्धिजीवियों एवं इतिहासकारों ने इस दिशा में प्रयास शुरू किया। 1857–58 के विद्रोह पर जिन इतिहासकारों ने लेखन किया उनमें सैयद अहमद खां[2], वी०डी० सावरकर[3], आर०सी० मजुमदार[4], हरप्रसाद चट्टोपाध्याय[5], एस०बी० चौधरी[6], एस०एन० सेन[7], के०के० दत्त[8] एवं डा० ताराचन्द[9] जैसे–इतिहासकारों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। यहाँ यह कहना गलत नहीं होगा कि आमतौर पर भारतीय इतिहासकारों के सामने इतिहास–लेखन की वैसी प्रारंभिक कठिनाइयाँ नहीं थी जैसी की शुरूआती दौर के अंग्रेज लेखकों के सामने थी। उदाहरणार्थ एक लंबे समय के बीत जाने के कारण इस घटना के विश्लेषण पर नस्ली भेदभाव का प्रभाव स्वाभाविक रूप से कम होने की पृष्ठभूमि बन गयी थी, वहीं दूसरी तरफ अब इतिहासकारों को सरकारी दस्तावेजों तथा अभिलेखागारों में सुरक्षित बहुत सारे ऐतिहासिक स्त्रोत उपलब्ध हुए जो पहले उपयोग में लाये नहीं जा सके थे। फलतः भारतीय इतिहासकारों के द्वारा किये गये कुछ उल्लेखनीय प्रयासों की सराहना भारत के बाहर के इतिहासकारों ने भी की है।

जहां एक ओर आमतौर पर साम्राज्यवादी और आगामी वर्षों में अहमद खाँ, आर०सी० मजुमदार एवं एच०पी० चट्टोपाध्याय जैसे कुछ देशी इतिहासकारों व बुद्धिजीवियों ने सन् 1857 के विद्रोह के इतिहास–लेखन में उस अवसर पर भारतीय जनमानस के बीच विस्तृत पैमाने पर व्याप्त असंतोषों के पीछे उत्तरदायी औपनिवेशिक शोषणपरक नीतियों को दरकिनार करते हुए अंग्रेजी शासन के तहत भारत में किये जानेवाले सामाजिक एवं धार्मिक सुधारों और चर्बीयुक्त ग्रीज्ड कारतूस को ही सर्वोपरि स्थान देते हुए इस विद्रोह को मूलतः सैनिक क्रांति माना है। वहीं दूसरी ओर मार्क्स व ऐंजल्स ने पहली बार इस क्रांति के कारणों के विश्लेषण में भारत में औपनिवेशिक शासन तंत्र की शुरूआती दिनों से ही यहाँ के सभी वर्गों पर पड़नेवाले प्रभावों का क्रमिक अध्ययन प्रस्तुत कर स्पष्ट रूप से यह उजागर किया है कि इसके मूल में सामाजिक और धार्मिक असंतोषों का महत्व या तो अप्रत्यक्ष था या गौण। इनका स्पष्ट विचार है, इसके पीछे आर्थिक और राजनीतिक असंतोष ही अंतर्निहित थे जिसका प्रभाव कमोबेश सभी वर्गों पर पड़ा, और यही कारण था कि जब देशी रेजिमेंट के सैनिकों ने विद्रोह की शुरूआत की तो भारत के सभी वर्गों एवं क्षेत्रों के लोगों ने इसमें सहभागिता निभाकर इस विदोह को लोकप्रिय स्वरूप प्रदान किया।

चूंकि इस तरह यह स्पष्ट है कि इस महान घटना की विशालता एवं इसके क्रांतिकारी स्वरूप ने प्रारम्भ से ही बुद्धिजीवियों एवं इतिहासकारों के बीच आकर्षण पैदा किया, इस कारण आज 1857–58 की घटना पर इतिहास–लेखन का इतना बड़ा भंडार उपलब्ध है कि किसी एक शोधार्थी के लिए इस पूरे भंडार की सभी सामग्रीयों का अध्ययन–विश्लेषण करना सरल नहीं है। एक तरफ जहाँ साम्राज्यवादी इतिहासकारों की कतार खड़ी है वहीं दूसरी ओर राष्ट्रवादी इतिहासकारों का भी एक जमघट है। इनके अलावा इस विद्रोह का विश्लेषण माक्सवादी इतिहासकारों के साथ–साथ विगत वर्षों में बड़े पैमाने पर निचले स्तर पर के इतिहास के विद्वानों द्वारा भी किया

गया है। इस विद्रोह पर वैचारिक भिन्नताओं एवं दृष्टिकोणों में अंतर के कारण इस घटना के कारणों, स्वरूप एवं प्रभावों की कोई सर्वमान्य व्याख्या या विश्लेषण करना संभव नहीं है।

शोध–लेख मुख्यतः भारतीय इतिहासकरों एवं बुद्धिजीवियों द्वारा इस घटना पर किये गये लेखन पर आधारित है, जिसमें मैंने कुछ प्रमुख भारतीय इतिहासकारों के इतिहास लेखन को अध्ययन–विश्लेषण का प्रमुख केन्द्र बनाया है।

यह शोध–लेख मुख्य रूप से मौलिक स्त्रोतों पर आधारित है, जिसके अंतर्गत विभिन्न इतिहासकारों एवं विद्वानों के द्वारा लिखे गये पुस्तकों एवं लेखों के साथ–साथ समकालीन अखबारों, पत्र–पत्रिकाओं, ख्याति प्राप्त संस्थानों द्वारा प्रकाशित किये गये जर्नलों, 'समरी ऑफ पेपर्स' विभिन्न ऐतिहासिक सम्मेलनों में पढ़े गये पेपर्स, रिविउड पेपर्स एवं आवश्यक सरकारी दस्तावेजों आदि का उपयोग विशेष तौर पर किया गया है। प्रकाशित ग्रन्थों का अध्ययन मुख्य रूप से तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में इस घटना को जानने, समझने और दृष्टिकोणों के बीच अंतर को दर्शाने के लिए किया गया है। इस अध्ययन–विश्लेषण के अंतर्गत उपर्युक्त वर्णित जिन स्त्रोतों का उपयोग किया गया है उसकी जानकारी के लिए अंत में एक संदर्भ सूची संलग्न है।

इस शोध–लेख के अन्तर्गत भारतीय इतिहासकारों के द्वारा 1857–58 के इतिहास–लेखन के विश्लेषण तथा चित्रण के अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से उजागर होता है कि इन भारतीय इतिहासकारों ने इस विद्रोह पर उपलब्ध साम्राज्यवादी इतिहास–लेखन से अलग हटकर प्रामाणिक तरीके से इस घटना के विभिन्न पहलुओं का उचित और सर्वमान्य ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करने में ये भारतीय इतिहासकार पूरी तरह सफल रहें। जैसा प्रथम अध्याय में स्पष्ट किया गया है, सैयद अहमद खाँ और सावरकर के विद्रोह के इतिहास–लेखन ने आनेवाले दिनों में इसे इतिहास–लेखन के लिए एक मजबूत आधार प्रदान किया। प्रारंभिक दौर में इस पृष्ठभूमि के निर्माण करने वाले इतिहासकारों के योगदानों का प्रभाव 20वीं शताब्दी के द्वितीय चरण के शुरूआती दशक के भारतीय इतिहासकारों पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है।

एक ओर जहाँ सैयद अहमद खाँ ने 'असबाब–ए–बग़ावत–ए–हिन्द[10]' में मुख्य रूप से विद्रोह के कारणों पर प्रकाश डालते हुए इस्ट इंडिया कंपनी के साम्राज्य विस्तार की नीति एवं शासन व्यवस्था में आमूल परिवर्तन किये जाने के प्रयासों को भारतीयों के बीच कम्पनी सरकार के खिलाफ असंतोष का तात्कालिक कारण बताया, वहीं दूसरी तरफ वी०डी० सावरकर ने अपनी पुस्तक 'भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' में साम्राज्यवादी नीतियों और प्रशासनिक व्यवस्था के खिलाफ बढ़ते हुए व्यापक असंतोष को चित्रित किया और इस विद्रोह के पीछे आम लोगों के समर्थन को दिखाते हुए इसको भारत की आजादी की पहली लड़ाई के रूप में रखने का प्रयास किया।[11] यहाँ यह कहना गलत नहीं होगा कि शुरूआती दौर के इन भारतीय इतिहासकारों के सामने स्वाभाविक रूप से कुछ प्रारंभिक कठिनाइयाँ थी चूँकि इस समय इस विद्रोह पर किये गये इतिहास–लेखन का स्वरूप मूलतः विदेशी था और साम्राज्यवादी हितों से प्रभावित था। इसके निष्पक्ष अध्ययन के लिए सरकारी और गैर–सरकारी ऐतिहासिक स्त्रोतों की उपलब्धता भी नहीं थी। इन कठिनाइयों के बावजूद सैय्यद अहमद खां तथा सावरकर ने इस विद्रोह का जो विश्लेषण प्रस्तुत किया वह मौलिक रूप से अबतक किये गये साम्राज्यवादी इतिहासकारों के विवेचन से भिन्न था।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि 1857–58 के इस व्यापक जनविद्रोह ने भारत के बाहर विभिन्न देशों में बुद्धिजीवियों का ध्यान आकृष्ट किया था। और समकालीन विदेशी विद्वतजनों और पत्रकारों ने इस घटना पर महत्वपूर्ण ढंग से टिप्पणियाँ भी की। विश्वप्रसिद्ध समकालीन राजनीति दार्शनिक कार्लमार्क्स ने अंग्रेजी औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ इसको एक अभूतपूर्व विद्रोह मानते हुए खासतौर पर इस पर ध्यान देते हुए इसका बहुत ही रोचक विश्लेषण भी किया जो कि लेखों के रूप में समकालीन पत्रिका न्यूयार्क डेली ट्रिब्यून में प्रकाशित हुआ। यद्यपि यह स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता है कि सैयद अहमद खां तथा सावरकर ने कार्लमार्क्स के विश्लेषण को पढ़ा था, किन्तु मार्क्स की ही भांति इन समकालीन इतिहासकारों ने कारणों के अपने विश्लेषण में भी विभिन्न कारणों को उत्तरदायी बताते हुए मुख्य तौर पर इसे अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन की नीतियों से प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न एक विद्रोह के रूप में ही देखा।

बीसवीं शताब्दी के द्वितीय चरण में इस घटना पर लिखने वाले भारतीय इतिहासकारों में विशिष्ट स्थान रखनेवाले डा० आर०सी० मजुमदार ने इस घटना के इतिहास–लेखन में सावरकर की राष्ट्रवादी धारा से हटकर एक मध्यममार्ग अपनाने का प्रयास किया जो कुछ अंशों में गैर भारतीय साम्राज्यवादी इतिहासकारों से मिलता–जुलता था। मजुमदार की दृष्टिकोण में यह विद्रोह न तो सुसंगठित एवं सुनियोजित द्वन्द्व था और न ही पहला स्वतंत्रता संग्राम। चूँकि उनकी राय में विद्रोह ने भिन्न–भिन्न स्थानों पर स्थानीय कारणों से प्रभावित होकर अलग–अलग रूप धारण किया।[12] अपने विश्लेषण में मजुमदार ने यह विचार व्यक्त किया कि यह विद्रोह मूलतः सैनिकों के बीच असंतोष से शुरू हुआ और बाद में जहाँ–तहाँ व्यक्तिगत स्वार्थों एवं भावनात्मक कारणों से प्रेरित होकर अन्य लोग भी इस विद्रोह में शामिल हुए। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मजुमदार का मुख्य उद्देश्य अन्य भारतीय इतिहासकारों के विश्लेषण को गलत बतलाना और अपने चित्रण को सही दिखाना था।[13]

यद्यपि सुरेन्द्रनाथ सेन भारत सरकार प्रायोजित इतिहासकार थे और समय सीमा रहने के कारण उनके पास समय की भी कमी थी, इसके बावजूद सेन ने यथासंभव उपलब्ध सरकारी तथा गैर–सरकारी स्त्रोतों का अध्ययन कर इस घटना के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत ब्योरा रखने का प्रयास किया। यह कहा जा सकता है कि उनका विश्लेषण सारगर्भित है और उन्होंने किसी भी महत्वपूर्ण बिन्दु को नजरअंदाज नहीं किया है। इस प्रकार उनकी राय में यह विद्रोह पूर्व नियोजित नहीं था और न ही यह भारत के किसी राजनीतिक शक्ति द्वारा प्रेरित अथवा नियंत्रित था। इसकी शुरूआत मुख्य रूप से सैनिकों के असंतोष के कारण हुई, किन्तु बाद में इसको कई स्थानों पर विभिन्न कारणों से बड़े पैमाने पर असैनिक जनता का भी समर्थन मिला। परिणामस्वरूप बिहार के शाहाबाद उत्तर प्रदेश में कानपुर, लखनऊ तथा अन्य कई स्थानों पर आम लोगों की सहभागिता के फलस्वरूप इस विद्रोह ने जनसाधारण के विद्रोह का रूख अख्तियार किया।[14]

1857–58 के विद्रोह पर किये गये भारतीय इतिहास–लेखन में इतिहासकार कालीकिंकर दत्त और ताराचंद के योगदानों के विलक्षण महत्व को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। इन दोनों इतिहासकारों ने कारणों के अपने विश्लेषण में भारतीयों के बीच मौलिक असंतोष के कारणों के विश्लेषण को मुख्य आधार बनाया। परिणामस्वरूप ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के अंतर्गत उनकी नीतियों द्वारा भारतीयों का औपनिवेशिक शोषण तथा उनपर जबरदस्ती अंग्रेजीयत का थोपा जाना उनके विवेचन का मुख्य केन्द्र बिन्दु बना। इस दृष्टिकोण से देखने पर

ऐसा प्रतीत होता है कि दत्त और ताराचंद के इतिहास लेखन पर राष्ट्रवादी और मार्क्सवादी दोनों ही विचारों का प्रभाव था। इन इतिहासकारों ने स्पष्ट शब्दों में यह विचार व्यक्त किया कि 1857–58 का विद्रोह भारत की खोई हुई प्रतिष्ठा की पुर्नवापसी के लिए परंपरागत तरीके से किया भारतीयों का अंतिम व्यापक प्रयास था। इसकी असफलता ने आनेवाले दिनों में भारतीयों को सही राजनीतिक पाठ पढ़ाया और उन्हें अंग्रेजी शासन के खिलाफ राष्ट्रवादी विचारों से प्रेरित स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने के लिए अग्रसर किया।

जहाँ एक ओर इतिहासकार हर प्रसाद चट्टोपाध्याय के विचार बहुत अंशों में आर०सी० मजुमदार के विचार से समानता रखते हैं; वहीं दूसरी तरफ एस०बी० चौधरी ने दत्त और ताराचंद की भांति अपने अध्ययन में इस विद्रोह के लोकप्रिय नागरिक स्वरूप और उसमें आम भारतीयों की भागीदारी को दिखाने का सराहनीय प्रयास किया है।[15] चौधरी ने अपने विश्लेषण को यथासंभव उपलब्ध सरकारी तथा गैर–सरकारी ऐतिहासिक स्त्रोतों से निकाले गये तथ्यों पर आधारित किया है।[16]

निष्कर्षतः

अन्त में यह कहा जा सकता है कि इस घटना के इतिहास–लेखन के अध्ययन के द्वारा ही भारतीय इतिहासकारों द्वारा शुरू से लिखे गये इतिहास–लेखन के दृष्टिकोण के अन्तर तथा उनके विश्लेषणों की त्रुटियों एवं खूबियों को सही ढंग से जाना और समझा जा सकता है। यहाँ यह कहना भी गलत नहीं होगा कि इस प्रकार के अध्ययन के बिना हम इन भारतीय इतिहासकारों के लेखन की प्रामाणिकता एवं स्थायी महत्व का भी सही आकलन नहीं कर सकते हैं।

संदर्भ सूचीः–

1. रिफ्लेक्शंस ऑन द म्यूटिनी (1857–59) के०के० दत्त, कलकत्ता विश्वविद्यालय, 1966, पृ०सं० 52–53
   द ग्रेट रिबेलियन ए लेफ्ट अपराइजल–एडिटेड बाई सीताराम येचुरी, 2008, ए पिपल्स डेमोक्रेसी पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, एडिटर्स कमेंट, पृ०सं०-X
   प्रोसिडंग्स ऑफ इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, 1975, रिफ्लेक्शन ऑफ इंडियन पिपल्स स्ट्रग्ल इन द कंटेम्पोररी रसियन प्रेस बाई एन०पी० वर्मा, पृ०सं०–29
   इंडियन हिस्ट्र कांग्रेस, 6ठा सेशन समरी ऑफ पेपर्स, 1975 / एन०एम०एल०, रिफ्लेक्शंस ऑफ इंडियन पिपल्स स्ट्रगल (1860–1890) इन द कंटेपोररी रसियन प्रेस बाइ एन०पी० वर्मा, पृ०सं०–22
2. 1857–58 के विद्रोह पर भारतीय इतिहास लेखन 2012 शोध प्रबंध डॉ मनोज कुमार पटना विश्वविद्यालय पटना। भारतीय इतिहास लेखन के विविध आयाम सेन्ट्रल हिन्दी डायरेक्टोरेट न्यू दिल्ली 2016 डॉ मनोज कुमार। – पृ०सं० 32–42
   सर सैयद अहमद खान द कॉजेज ऑफ़ इंडियन रिवोल्ट ट्रांसलेटेड* इंग्लिश वाई हिज टू इंग्लिश फ्रेंड्स बनारस, 1873। सर सैयद अहमद खान द लोयालर मोहमडस ऑफ इंडिया मेरठ 1807 पार्ट फर्स्ट – पृ०सं० 10–42
3. इंडियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस 1857 फस्ट पब्लिश्ड इन हॉलैंड 1909 इन फस्ट ऑथराइज्ड एंड पब्लिक एडिशन पब्लिश्ड इन इंडिया इन 1947 का हिन्दी अनुवाद 1857 का स्वतंत्र समर विनायक दामोदर सावरकर प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली। पृ०सं० 52–62
4. आर.सी. मजुमदार, द सिपॉय म्यूटिनी एंड द रिवोल्ट ऑफ 1857, कोलकाता, फर्मा, के.एल. मुखोपाध्याय, सेकण्ड एडिशन, 1963।
   पृ०सं० 60–90
5. एच.पी. चट्टोपाध्याय, द शिपाय म्यूटिनी ए सोशल स्टडी एंड एनालिसिस कोलकाता 1957। पृ०सं० 60– 62
6. एस. बी. चौधरी, थ्यूरिज ऑफ द इंडियन म्यूटिनी कोलकाता 1965 शशि भूषण चौधरी, सिविल डिस्टरबेंसस डयूरिंग ब्रिटिश रूल इन इंडिया 1765–1857, कोलकाता, 1955। शशि भूषण चौधरी सिविल रिबेलीयन एंड द इंडियन म्यूटिनीज, कोलकाता 1957। पृ०सं० 56–58
7. सुरेंद्रनाथ सेन, 1857 सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, नई दिल्ली प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1957। पृ०सं० – 05
8. के. के. दत्त रिफ्लेक्शंस ऑन दी न्यू टीवी कोलकाता 1966 के. के. दत्त बायोग्राफी ऑफ कुंवर सिंह एण्ड अमर सिंह, पटना, के. पी. जयसवाल रिसर्च इंस्टीटयूट, 1957। पृ०सं० 42–52

9. 1857–58 के विद्रोह पर भारतीय इतिहास लेखन 2012 शोध प्रबंध डॉ मनोज कुमार पटना विश्वविद्यालय पटना। भारतीय इतिहास लेखन के विविध आयाम सेन्ट्रल हिन्दी डायरेक्टोरेट न्यू दिल्ली 2016 डॉ मनोज कुमार। – पृ०सं० 32–42
सर सैयद अहमद खान द कॉजेज ऑफ़ इंडियन रिवोल्ट ट्रांसलेटेड* इंग्लिश वाई हिज टू इंग्लिश फ्रेंड्स बनारस, 1873। सर सैयद अहमद खान द लोयालर मोहमडस ऑफ इंडिया मेरठ 1807 पार्ट फर्स्ट – पृ०सं० 271–274
10. वही, पृ०सं० 271–274
11. वही, पृ०सं० 271–274
12. वही, पृ०सं० 271–274
13. वही, पृ०सं० 271–274
14. वही, पृ०सं० 271–274

****